

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 5, विलापगीत 2: 1-22

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए हैं। यह सत्र 5 है, विलाप 2:1-22।

इस वीडियो में हमें पूरे अध्याय 2 को देखना चाहिए और इसके विभिन्न भागों का त्वरित विश्लेषण करना और यह देखना अच्छा होगा कि कौन बोल रहा है।

अध्याय के अधिकांश भाग में, अध्याय 1 में हमारे मुख्य वक्ता, या हमारे गुरु, बोलना जारी रखते हैं और सिथ्योन से कार्यभार संभालते हैं, जो अध्याय 1 के अंत में बोल रहे थे। लेकिन यहाँ, श्लोक 1 से 10 में, हमारे गुरु यरूशलेम और यहूदा के बारे में बात कर रहे हैं कि हाल ही में यरूशलेम और यहूदा के पतन की त्रासदी में परमेश्वर ने उनके साथ क्या किया था। और फिर, श्लोक 11 से 19 में, गुरु अब सिथ्योन से त्रासदी के बारे में बात कर रहे हैं, और सिथ्योन को संबोधित किया गया है। और उस भाग के अंत में, श्लोक 18 और 19 में, गुरु सिथ्योन से प्रार्थना करने का आग्रह करते हैं।

और फिर अंत में, श्लोक 20 से 22 में, सिथ्योन प्रार्थना करता है। अध्याय 2 को समग्र रूप से देखने पर, हम पाते हैं कि इसमें एक साहित्यिक रूपरेखा है, और यह प्रभु के दिन का मूल भाव है जिसे हम अध्याय 1 के अंत में पहले ही देख चुके हैं। श्लोक 1 उसके क्रोध के दिन की बात करता है, और फिर श्लोक 22 प्रभु के क्रोध के दिन की बात करता है। और इसलिए यह साहित्यिक रूपरेखा है, और यह गिरे हुए यहूदा और यरूशलेम की त्रासदी की मूल व्याख्या के रूप में निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं से अपील है।

और फिर, शैली के रूप में, छंद 1 से 10 स्पष्ट रूप से एक अंतिम संस्कार विलाप हैं। यह इस बात से शुरू होता है कि कैसे वह चीख, वह चीख, वह भावनात्मक प्रतिक्रिया इससे पहले कि वह अधिक तर्कसंगत सोच के तरीकों में बदल जाए। और सोचने का वह तर्कसंगत तरीका दुख के रूप में नुकसान के रूप में अतीत में यरूशलेम की सामान्यता और यरूशलेम द्वारा अनुभव की गई असामान्यताओं की श्रृंखला के बीच उलटफेर के रूप में बोल रहा है।

लेकिन जैसा कि हमने पहले देखा है, यह कोई पारंपरिक अंतिम संस्कार विलाप नहीं है; यह पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष नहीं है, लेकिन इसमें ईश्वर शामिल है, और वास्तव में, इसमें ईश्वर की भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया गया है। और इसलिए, यह अंतिम संस्कार विलाप का एक रूपांतर है। लेकिन मूल रूप से, इसमें ईश्वर के हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप यरूशलेम को हुए नुकसान का वर्णन करते हुए शोक शामिल है।

फिर हम दुःख प्रक्रियाओं, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के संदर्भ में सोच सकते हैं जो यहाँ हो रही हैं। और सबसे पहले यह नुकसान पर प्रतिक्रिया करने के संकीर्ण अर्थ में दुःख है। और विशेष रूप से

1 से 10 में त्रासदी के अर्थ पर चिंतन है, धार्मिक कारक पर जो दृढ़ता से जोर देता है कि यहोवा जिम्मेदार है।

तीसरा, पद 5 के अन्त में शोकपूर्ण व्यवहार की प्रतिक्रिया का उल्लेख किया गया है और पद 10 में भी इसकी चर्चा की गई है। यह अन्तिम कारक हमें पद 1 से 10 को दो भागों में विभाजित करने में मदद करता है: 1 से 5 और फिर 6 से 10। 1 से 5 में यहोवा द्वारा लाई गई विपत्ति को दर्शाया गया है, और पद 5 के अन्त में उसके द्वारा उत्पन्न संकट के साथ इसका समापन होता है।

और फिर 6 में एक बार फिर यहोवा द्वारा लाई गई आपदा को उठाया गया है, और पद 10 में, इससे होने वाली परेशानी को। इसमें शामिल प्रक्षेपवक्र स्पष्ट रूप से नुकसान के संदर्भ में दुःख और निहित रूप से अपराधबोध है क्योंकि यरूशलेम और यहूदा ईश्वर की सज़ा के शिकार हैं। पद 1 में मुख्य वक्ता प्रभु के उस दिन के मूल भाव को उठाता है जिसके साथ सिय्योन ने अध्याय 1 और पद 12 में अपना पहला भाषण शुरू किया था।

और इसलिए, वह इस त्रासदी की भविष्यवाणी करने वाली व्याख्या को अपने हाथ में ले लेता है। निर्वासन-पूर्व की भविष्यवाणी की अधिकांश सामग्री नकारात्मक थी, जो परमेश्वर के आने वाले न्याय के बारे में बात करती थी। और इसका वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया एक मूल भाव प्रभु का दिन था, वह समय जब परमेश्वर अपने लोगों के विरुद्ध पाप करने के लिए एक भयानक प्रतिशोध में हस्तक्षेप करेगा।

अध्याय 1, श्लोक 12 में क्रोध को परमेश्वर के भयंकर क्रोध के दिन के क्रोध से जोड़ा गया है। गुरु क्रोध को दिन के साथ जोड़ने की बात श्लोक 1 के अंत में, क्रोध के दिन पर फिर से दोहराते हैं। और हम पाएंगे कि क्रोध एक बहुत बड़ी विशेषता है।

यह बार-बार आता है, या तो शाब्दिक रूप से या समानार्थक शब्दों के साथ। समानार्थक शब्द। हम पद 2 में क्रोध पाते हैं। हम पद 3 में भयंकर गुस्सा पाते हैं। और इसी तरह, यह चलता रहता है।

हम पद 4 में आग की तरह क्रोध और पद 6 में भयंकर आक्रोश पाते हैं। और इसलिए यह बहुत ही खास बात है, क्रोध के इस पहलू को खोलना, और हमें इसके बारे में सोचना होगा। हमने देखा कि प्रभु का दिन बहुत ज़्यादा था, होता है, निश्चित रूप से निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं में होता है। मुझे याद नहीं आता कि हमने सपन्याह में क्रोध के साथ इसके संबंध का उल्लेख किया था या नहीं। भविष्यवक्ता सपन्याह प्रभु के उस दिन को क्रोध से जोड़ता है।

हाँ, मैंने इसके बारे में बात की थी, सपन्याह 1:14, प्रभु का महान दिन निकट है और श्लोक 15 कहता है कि वह दिन क्रोध का दिन होगा। और इसलिए, इस पूरे उपचार में, हम निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं के साथ वापस आ गए हैं, और यहाँ दावा किया गया है कि भविष्यवाणी पूरी हुई है। और इसलिए, क्रोध वहाँ पहले भाग पर हावी है।

आइए हम ईश्वर के क्रोध के बारे में सोचें। हम इसके बारे में बहुत ज़्यादा नहीं सोचते। ईश्वरीय क्रोध, अगर हम इसके बारे में सोचते हैं, तो हम इसकी तुलना ईश्वर के प्रेम से करते हैं और ऐसा करके हम सही हैं क्योंकि शास्त्र खुद ऐसा करता है।

हम यूहन्ना अध्याय 3 के बारे में सोचते हैं, और वहाँ तीन हैं, और हमारे विचार के लिए वहाँ दो महत्वपूर्ण आयतें हैं। यूहन्ना 3.16, परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए। लेकिन यूहन्ना 3.36 हमें उस वादे का एक छाया पक्ष बताता है।

जो कोई पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन मिलता है; जो कोई पुत्र की अवज्ञा करता है, वह जीवन नहीं देखेगा, बल्कि उसे परमेश्वर के क्रोध को सहना होगा। और यहाँ हम क्रोध के विरुद्ध प्रेम की जीत देख रहे हैं। इन दिनों हम परमेश्वर के क्रोध पर उपदेश कभी नहीं सुनते, लेकिन हम परमेश्वर के प्रेम के बारे में बहुत कुछ सुनते हैं। बाइबल उससे कहीं अधिक संतुलित है।

शब्दों की यह जोड़ी है, ध्रुवीकृत शब्द, प्रेम या क्रोध। हाँ, वे ध्रुवीकृत हैं, वे एक अर्थ में समानांतर हैं लेकिन वे मौलिक रूप से भिन्न हैं, न केवल नकारात्मक और सकारात्मक रूप में बल्कि अन्य मामलों में भी। प्रेम ईश्वर का एक नियमित गुण है, क्रोध नहीं।

क्रोध मानव उत्तेजना के प्रति एक प्रतिक्रिया है। यदि कोई मानवीय उत्तेजना न होती, तो ईश्वर कभी क्रोधित नहीं होते। ईश्वरीय क्रोध न्याय के नाम पर मानवीय गलत कामों के प्रति ईश्वर की नैतिक प्रतिक्रिया है।

यह कोई आरंभिक कारक नहीं है, बल्कि यह एक प्रतिक्रियात्मक कारक है। हमारे पहले वीडियो में, हमने 2 राजा 25 में यरूशलेम के पतन के वर्णन का संदर्भ दिया था, और हमने देखा कि यह काफी हद तक एक ऐतिहासिक विवरण था, लेकिन हाँ, यह 24 और 25 है। श्लोक 24 के अंत में, एक धार्मिक तत्व को बस यूँ ही लाया गया है, लेकिन यह बहुत महत्वपूर्ण है; यह कुछ ऐसा है जिसे संपादकों ने इस महाकाव्य इतिहास में पहले ही स्पष्ट कर दिया है।

2 राजा 24 20, यरूशलेम और यहूदा ने प्रभु को इतना क्रोधित कर दिया कि उसने उन्हें अपनी उपस्थिति से निकाल दिया, और इसलिए यरूशलेम का पतन परमेश्वर के क्रोध का एक उदाहरण है। और यहाँ हमारे गुरु इस बात से सहमत होंगे कि यह सच है। विलाप 2 में एक और कीवर्ड है, वह पहला भाग, और वह है नाश करना, नाश करना।

यह भी एक नकारात्मक शब्द है जो क्रोध के साथ बहुत मेल खाता है, लेकिन यहाँ क्रोध का परिणाम है। पद 2 में, प्रभु ने नाश किया है, और पद 5 में, उसने नाश किया है। हम इसे दो बार पाते हैं और फिर बाद में पद 8 में, नाश करते हुए।

और इसलिए यहाँ उस क्रोध का परिणाम विनाश के रूप में सामने आता है। श्लोक 1 से 7 की एक खास विशेषता यह है कि परमेश्वर एक विषय है। परमेश्वर को नकारात्मक रूप में दर्शाया गया है।

उनमें से ज़्यादातर वाक्यों में भगवान विनाश की क्रिया के रूप में विषय है और यरूशलेम या यहूदा का हिस्सा उस विनाश का उद्देश्य है। और यह कोई संयोग नहीं है, यह उस चीज़ से जुड़ता है जो हम निर्वासन-पूर्व भविष्यवक्ताओं में पाते हैं। यहाँ, मैं भविष्यवक्ताओं के बोलने के तरीके का उल्लेख करता हूँ, जिसे हम आपदा की भविष्यवाणी या न्याय की भविष्यवाणी कहते हैं।

इसमें दो घटक भाग या तीन भी हो सकते हैं, और यह एक कारण बताकर शुरू होता है। भगवान को अपने लोगों या राजधानी को क्यों दंडित करना चाहिए? एक कारण दिया गया है, और फिर एक घोषणा है, और दो खंडों का दूसरा भाग नकारात्मक तरीके से ईश्वरीय हस्तक्षेप की बात करता है। भगवान कुछ कर रहे हैं, और मैं कुछ करूँगा। कुछ बुरा करो, और फिर यह मानवीय परिणामों की बात करता है।

बार-बार, हम पाते हैं कि आपदा की भविष्यवाणी का यह सूत्र बार-बार इस्तेमाल किया जा रहा है। और मैं सिर्फ एक उदाहरण पढ़ूँगा, अमोस अध्याय 2, श्लोक 4 और 5। इस प्रकार यहोवा कहता है, यहूदा के तीन अपराधों और चार के लिए, मैं दंड को वापस नहीं लूँगा क्योंकि उन्होंने यहोवा के कानून को अस्वीकार कर दिया है और उसकी विधियों का पालन नहीं किया है, बल्कि उन्हीं झूठों से भटक गए हैं जिनके पीछे उनके पूर्वज चले थे। यही कारण है।

लेकिन अब हम घोषणा पर आते हैं। सबसे पहले, ईश्वरीय हस्तक्षेप है, और फिर मानवीय परिणाम हैं। इसलिए, मैं यहूदा पर आग भेजूँगा, और यह यरूशलेम के गढ़ों को भस्म कर देगी।

और उस भविष्यवाणी पैटर्न में वह तत्व, मैं यहूदा पर आग भेजूँगा, यह वही है जिसे विलाप के अध्याय 2 में इन शुरुआती छंदों में उठाया जा रहा है, केवल इस बदलाव के साथ कि यह भगवान के हस्तक्षेप की रिपोर्ट है, और इसलिए मैं के बजाय यह वह है जो तीसरे व्यक्ति में स्वयं भगवान जिम्मेदार है। और इसलिए, विलाप यहाँ फिर से है, भविष्यवाणी की किताबों से एक पत्ता लेते हुए, और यह बोलने की इस शैली को आपदा के भविष्यवाणियों के साथ जोड़ता है। और इसलिए यह भविष्यवाणी के रहस्योद्घाटन का एक और समर्थन है।

आपदा की वे भविष्यवाणियाँ, उस नकारात्मक हस्तक्षेप के साथ, ईश्वर का व्यक्तिगत हस्तक्षेप। यह घटित हुआ है। यह यहाँ है।

और यह दुखद रूप से सच साबित हुआ है। अक्सर, किसी को विलाप की सही व्याख्या करने के लिए उसके पीछे की पृष्ठभूमि को देखने की ज़रूरत होती है। विलाप में बहुत कुछ सांस्कृतिक संदर्भ है जिसकी सराहना की जानी चाहिए।

तो, अब हम समझ सकते हैं कि गुरु क्या कह रहे हैं। वह मण्डली को बेबीलोन के विरुद्ध हारे हुए युद्ध की अपनी व्याख्या को धार्मिक तरीके से इस राष्ट्रीय स्थिति में परमेश्वर के स्वयं के हस्तक्षेप के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। और इसलिए हमें पहले पद में सिय्योन के बारे में बात करते हुए यरूशलेम का संदर्भ मिलता है।

लेकिन पहले भाग का ज़्यादातर हिस्सा यहूदा के बारे में है, पहली से पाँचवीं आयतों में नहीं। लेकिन फिर छठी से दसवीं आयतों में वह यरूशलेम के बारे में बात करना चाहता है और इसलिए इसमें अंतर है। लेकिन वह सिथ्योन से शुरू करता है।

कैसे प्रभु ने अपने क्रोध में आकर बेटी सिथ्योन को अपमानित किया है। उस अनुवाद के बारे में कुछ अनिश्चितता है लेकिन हम उस क्रिया के बारे में नहीं जानेंगे। बेटी सिथ्योन।

एक बार फिर, सिथ्योन को एक महिला के रूप में चित्रित किया गया है। उसने इस्राएल के वैभव को स्वर्ग से धरती पर गिरा दिया है। उसने अपने क्रोध के दिन अपने पांवों की चौकी को याद नहीं किया।

इस्राएल की महिमा और पावदान की व्याख्या मैं यहाँ सिथ्योन के रूपकों के रूप में करता हूँ, क्योंकि इससे ठीक पहले बेटी सिथ्योन का उल्लेख किया गया है। यरूशलेम की महिमा यह है कि यह इस्राएल का गौरवशाली केंद्र और यहूदा में महत्व का केंद्र बिंदु था और यह उसका पावदान था। मुख्य रूप से सन्दूक को परमेश्वर का पावदान माना जाता था।

भगवान की मौजूदगी की छवि, भगवान की धार्मिक मौजूदगी। लेकिन अब इसे शहर पर लागू किया जाता है। भगवान खुद उस शहर में मौजूद रहे हैं।

लेकिन उसे अपने पांव की चौकी याद नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह यहाँ बीती हुई याददाश्त की बात नहीं कर रहा है। लेकिन यह यरूशलेम की उस विशेष भूमिका की पूरी स्थिति को अनदेखा करने, उसे अपने दिमाग से निकाल देने और बिल्कुल अलग तरीके से काम करने की बात कर रहा है।

पद 2 में, प्रभु ने बिना दया के याकूब के सभी निवासों को नष्ट कर दिया है। यह भयानक लगता है, लेकिन हमें याद रखना चाहिए, वास्तव में, यह निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणियों की प्रतिध्वनि है। यह बिना दया के, बिना किसी दया के है।

यह निर्वासन-पूर्व भविष्यवाक्ताओं में कई बार आता है। उदाहरण के लिए, यशायाह अध्याय 30 और श्लोक 14 में, हमारे पास NRSV में निर्दयता से शब्द है, लेकिन सख्ती से यह बिना दया या बिना दया के है। और यह अध्याय 2 में एक अभिव्यक्ति है, यह कई बार आता है।

यह फिर से श्लोक 17 में होने जा रहा है। तो, यह इन कीवर्ड में से एक और है। श्लोक 17 में, उसे बिना दया के नष्ट कर दिया जाता है।

दुर्भाग्य से, NRSV अब अपने अनुवाद में बदलाव करता है, लेकिन यह वही अभिव्यक्ति है जो शुरू में बिना दया के थी। और फिर आयत 21 में, बिना दया के। NIV में इन तीनों अभिव्यक्तियों के लिए बिना दया के अनुवाद किया गया है।

और इसलिए, यह भी भविष्यवाणियों से लिया गया है। इसलिए, विभिन्न कोणों से, यह कहा जा रहा है कि भविष्यवाणी आपकी आँखों के सामने पूरी हुई है। यह अब यहूदा के बारे में बात कर रहा है, याकूब के निवास नष्ट हो गए हैं।

बेटी यहूदा के गढ़ यहूदा की सीमाओं पर रक्षात्मक किले हैं। और फिर उसे राज्य और उसके शासकों के अपमान में जमीन पर गिरा दिया गया। इतने सदियों तक एक राजा द्वारा शासित वह शाही राष्ट्र अब नष्ट हो चुका है।

पद 3 में, वह भयंकर क्रोध में इस्राएल की सारी शक्ति को काट डालता है। वस्तुतः यह सींग है और NIV ने इसका शाब्दिक अनुवाद रखा है, लेकिन पाठक के लिए इसका क्या अर्थ होगा, मुझे यकीन नहीं है। लेकिन सींग एक रूपक है।

यह जंगली बैल से लिया गया है, जो अपने दुश्मन, दूसरे जंगली बैल से लड़ने में शामिल होता है। और जब वह दुश्मन को गिरा देता है, तो वह अपना सींग उठाता है और दहाड़ता है। और सींग को ऊपर उठाना उसकी विजयी शक्ति है।

अध्याय के अंत में, हम पाएंगे कि जब हम इस पर आते हैं तो यह धारणा उभर कर सामने आती है। हाँ, श्लोक 17 में, उसने आपके शत्रुओं की शक्ति को बढ़ाया है। वस्तुतः, उसने आपके शत्रुओं के सींगों को जंगली बैलों की तरह ऊँचा किया है।

आह, हम जीत गए, हम जीत गए। और भगवान उस प्रतीकात्मक सींग को ऊपर उठाने के लिए जिम्मेदार रहे हैं। और फिर हम पाते हैं कि भगवान अधिक अंतरंग रूप से, अधिक व्यक्तिगत रूप से शामिल हैं, कोई कह सकता है, श्लोक 4 में, उन्होंने अपने धनुष को तीर की तरह झुकाया है और अपने दाहिने हाथ को दुश्मन की तरह स्थापित किया है।

वह मारा गया है। वह यहाँ एक तीरंदाज है। वह उन सभी को मार दिया गया है जिन पर हम बेटी सिथ्योन के तम्बू में गर्व करते थे, हमारे सभी नेता, धार्मिक और राजनीतिक, और वे सभी मर चुके हैं। उसने अपना क्रोध आग की तरह उड़ोला है।

प्रभु एक दुश्मन की तरह बन गए हैं। उन्होंने इसराइल को नष्ट कर दिया है, उसके सभी महलों को नष्ट कर दिया है। हम वापस चले गए हैं, हमारे पास बेटी सिथ्योन का वह तम्बू था, वह शहर है।

हम सिथ्योन के बारे में बात करने के लिए वापस चले गए, लेकिन अब यहूदा का मुख्य विषय 5 में वापस आता है। इस्राएल को नष्ट कर दिया, उसके सभी महलों को नष्ट कर दिया। हम महलों को एक शाही शब्द के रूप में सोचते हैं, बर्किंगम पैलेस, लेकिन बेहतर ढंग से प्रस्तुत किए गए मकान, जिन्हें अमीर लोगों ने अपने लिए बनवाया, बड़ी इमारतें, अच्छी तरह से संरक्षित इमारतें, जिनसे यहूदा भरा हुआ था - और इसके गढ़ों को बर्बाद कर दिया, बेटी यहूदा के शोक और विलाप में कई गुना वृद्धि हुई।

शोक व्यवहार का वह संदर्भ 1 से 5 के इस पहले छोटे से भाग को समाप्त करता है, शोक की यह प्रतिक्रिया। फिर हम फिर से शुरू करते हैं, लेकिन यहाँ हम केवल 6 से 9 तक सिथ्योन पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। उसने अपने बूथ को बगीचे की तरह तोड़ दिया है। बूथ और फिर अगली आधी पंक्ति में तम्बू दोनों मंदिर के पुराने संदर्भ हैं।

और यहाँ, उसने अपने बूथ को बगीचे की तरह तोड़ दिया है, यह बहुत ज़्यादा समझ में नहीं आता है। यह वास्तव में एक तरह की संक्षिप्त अभिव्यक्ति है, बगीचे के बूथ की तरह, बगीचे में बूथ की तरह, बगीचे में आपको मिलने वाली एक कमज़ोर संरचना की तरह। उसने इसे तोड़ दिया है; मंदिर की उस ठोस संरचना ने उसके मंदिर को नष्ट कर दिया।

प्रभु को सिथ्योन, त्यौहारों और सब्त में समाप्त कर दिया गया है। और इसलिए यहाँ वास्तव में उस धार्मिक पूजा का नुकसान हुआ है जो इतने लंबे समय से, इतनी शताब्दियों से आयोजित की गई थी। और उसके भयंकर क्रोध में राजा और पुजारी को तिरस्कृत किया गया।

हमारे मन में अभी भी धार्मिक सेवाएँ हैं और राजा कभी-कभी धार्मिक सेवाओं में भाग लेता था, धार्मिक सेवाओं में भूमिका निभाता था। और इसलिए, यही कारण है कि उसका उल्लेख पुजारी के साथ किया गया है। और हम पद 7 में इस धार्मिक सोच को आगे बढ़ाते हैं। प्रभु ने अपनी वेदी का तिरस्कार किया है और अपने पवित्र स्थान को अस्वीकार कर दिया है।

वह शत्रु के हाथों में सौंप दिया गया, उसके महलों की दीवारें। ये महान भवन न केवल यहूदा में फैले हुए थे, बल्कि यरूशलेम की भी एक विशेषता थे। प्रभु के भवन में उत्सव के दिन की तरह कोलाहल मचाया गया।

यहाँ एक कड़वी विडंबना है क्योंकि मंदिर में पूजा-अर्चना के समय शोरगुल रहता था। मंदिर के गायक मंडली गाते थे और मण्डली जयजयकार करते हुए चिल्लाती थी, लेकिन अब यह बदल गया है। लेकिन अब भी शोर है, लेकिन अब यह भयानक शोर है, दुश्मन सैनिकों की कर्कश चीखें।

और इसलिए, यहाँ अंत में एक विडंबनापूर्ण विरोधाभास और तुलना है। और फिर पद 8 में, प्रभु ने बेटी सिथ्योन की दीवार को नष्ट करने का निश्चय किया। और यह कुछ ऐसा है जिसे पद 17 में आगे विकसित किया जाएगा।

जब हम पद 17 पर आते हैं, तो हम पद 8 पर वापस नज़र डाल सकते हैं और देख सकते हैं कि यह दृढ़ संकल्प परमेश्वर की योजना है, परमेश्वर की योजना है, परमेश्वर का जानबूझकर किया गया कार्य है जिसे उसने पहले ही अपने लोगों को घोषित कर दिया था। हम प्रतीक्षा करेंगे और पद 17 में उस व्याख्या को देखेंगे। उसने रेखा को बढ़ाया।

उसने अपना हाथ विनाश करने से नहीं रोका। रेखा को खींचना यहाँ एक रूपक है जिसका अर्थ है उस निंदनीय संपत्ति को चिह्नित करना जिसे नष्ट किया जाना था। और पुराने नियम में कई बार इसका इस्तेमाल किया गया है।

और परमेश्वर ने वह चिह्न, वह पीला टेप लगाया है जिसके बारे में हम कह सकते हैं, और फिर इस बिंदु से आगे, विनाश होगा। और पद 8 में, हमें उसका दोहराव मिलता है, पद 1 से 5 के उन मुख्य शब्दों में से एक। वह प्राचीर और दीवार को विलाप करने के लिए बुलाता है, और वे एक साथ दुर्बल हो जाते हैं। प्राचीर, बाहरी दीवार, और फिर अधिक ठोस आंतरिक दीवार।

और वे सभी गिर गए थे। दीवारें ध्वस्त हो गई थीं। और इसलिए बेबीलोन के लोग 18 महीने की घेराबंदी के अंत में आगे बढ़ सकते थे।

और उस आपदा के बारे में बात करते हुए, उसके द्वार ज़मीन में धंस गए हैं। उसने उसकी सलाखों को बर्बाद कर दिया है और तोड़ दिया है। आमतौर पर गेट के दोनों तरफ सलाखें होती थीं, लेकिन अब वह सलाखें नष्ट हो गई थीं।

और इसलिए, गेट को जबरन खोला जा सका। उसके राजा और राजकुमार राष्ट्रों के बीच हैं। एक और बड़ा नुकसान यह था कि उन्हें अन्य यहूदियों के साथ निर्वासित कर दिया गया था।

मार्गदर्शन अब नहीं रहा। यहाँ पद 9 के उत्तरार्द्ध में, हम नेतृत्व के खो जाने की बात कर रहे हैं। राजा और राजकुमार, शाही अधिकारी, वे अब यरूशलेम में नहीं हैं।

मार्गदर्शन अब नहीं रहा। यह वस्तुतः टोरा है, लेकिन निर्देश के अर्थ में, निर्देश जो पुजारी देते थे। और इसलिए, कोई पुरोहितीय निर्देश नहीं है क्योंकि पुजारी अब मौजूद नहीं हैं।

और फिर अंत में, भविष्यवक्ताओं को प्रभु से कोई दर्शन नहीं मिला। कोई नया भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन नहीं हुआ। और इसलिए, नेतृत्व का नुकसान हुआ, तीन प्रकार के नेतृत्व अब नहीं रहे।

और फिर, पद 10 में, हम ऐसी आपदा की प्रतिक्रिया में संकट के शोक व्यवहार पर वापस आते हैं। बेटी सियोन के बुजुर्ग चुपचाप ज़मीन पर बैठे हैं। उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली है।

वे टाट ओढ़ते हैं, बिल्कुल अय्यूब के दूसरे अध्याय के अंत में अय्यूब के सांत्वनादाताओं की तरह, जिसे हमने अपने पहले वीडियो में पढ़ा है। ये शोक की गतिविधियाँ हैं। इसमें बुजुर्ग शामिल होते हैं और फिर यरूशलेम की उम्र और लिंग की युवा लड़कियाँ भी एक आम शोक में एकजुट होती हैं।

यरूशलेम की युवतियों ने अपना सिर ज़मीन पर झुका लिया है। और ज़मीन के साथ यह जुड़ाव प्राचीन दुनिया में शोक मनाने का एक अहम हिस्सा है। पद 11 में, हमें खुद गुरु की प्रतिक्रिया मिलती है।

पद 10 में, उसने यरूशलेम में अन्य लोगों की प्रतिक्रियाओं के बारे में बात की है, और अब वह अपनी प्रतिक्रिया देता है। और यह आँसुओं के रूप में है, आँसुओं के रूप में। मेरी आँखें रोते-रोते थक गई हैं।

मेरा पेट उबकाई लेता है। यह एक मनोदैहिक प्रतिक्रिया है। मेरा पित्त ज़मीन पर बह जाता है।

मुझे उल्टी आ रही है। मैं अपने लोगों के विनाश से बहुत परेशान हूँ। और यहाँ इस गुरु की सहानुभूति है।

वह उन लोगों के साथ एक साथी नागरिक है जो सचमुच नष्ट हो गए थे और जो बच गए थे। फिर, वह एक उदाहरण देता है कि उसे क्या दुख हुआ, विशेष रूप से शहर की सड़कों पर बेहोश हो रहे शिशुओं और बच्चों का। और वह उस घेराबंदी की स्थिति के बारे में सोचता है।

और वयस्क लंबे समय तक जीवित रह सकते थे। उनके शरीर अधिक विकसित थे, लेकिन युवा, शिशु और शिशुओं में भूख और अभाव से निपटने की सहनशक्ति नहीं थी जो आवश्यक थी। और इसलिए, वह इसे एक भयानक बात के रूप में सोचता है, इन शिशुओं और शिशुओं की पीड़ा और उन्हें देने के लिए कोई भोजन नहीं।

और इसके बारे में आगे श्लोक 12 में बताया गया है। वे अपनी माताओं से रोए। ये सब वास्तव में भूतकाल होना चाहिए क्योंकि विलाप की स्थिति घेराबंदी के बाद, यरूशलेम पर कब्ज़ा करने के बाद की है, लेकिन यह उस घेराबंदी की स्थिति को वापस देख रहा है।

वे अपनी माताओं से चिल्लाते हैं, रोटी और शराब कहाँ है? वे शहर की सड़कों पर घायलों की तरह बेहोश हो जाते हैं, क्योंकि उनका जीवन उनकी माँ की गोद में उंडेल दिया जाता है। रोटी और शराब कहाँ है? हम कह सकते हैं कि रोटी और पानी कहाँ है, लेकिन पानी की आपूर्ति समाप्त हो गई है। और आप केवल यह देख सकते हैं कि भंडारण अलमारी में क्या था।

खैर, क्या बचा था? खैर, उम्मीद है कि उनके पीने के लिए वहाँ कुछ शराब हो सकती है। हो सकता है कुछ हो; यह सचमुच अनाज है, अनाज और रोटी थोड़ी देर बाद सड़ जाती है, लेकिन अनाज, अनाज और शराब कहाँ हैं? यह शाब्दिक अर्थ है। और इसके भंडारण की वस्तुएँ अभी भी इस भूखे वातावरण में बची हुई हो सकती हैं।

और वे घायलों की तरह बेहोश हो जाते हैं। घायल युद्ध में हताहत होते हैं, सैनिक लड़ाई में भाग लेते हैं, लेकिन यह एक तरह का नुकसान है जो इन बच्चों को इस कथित शहर में भुगतना पड़ता है। और उनकी माँएँ बस इतना ही कर सकती हैं कि उन्हें मरते समय अपनी बाहों में कसकर पकड़े रहें।

और इसलिए, पद 13 से 17 में, गुरु सिय्योन से बात करने के लिए मुड़ता है। अब उसने सिय्योन के बारे में, यहूदा के बारे में बात की है, लेकिन अब वह सिय्योन से बात करता है। वह अपने बगल में बैठी महिला की ओर मुड़ता है और उस पूजा-पद्धति में उससे बात करता है।

मैं तुमसे क्या कह सकता हूँ? तुम्हारी तुलना किससे करूँ? हे यरूशलेम की बेटी, तुम किससे तुलना करूँ? हे कुंवारी बेटी सिय्योन, मैं तुम्हारी तुलना किससे करूँ कि मैं तुम्हें सांत्वना दे सकूँ? क्योंकि तुम्हारा विनाश समुद्र जितना विशाल है, कौन तुम्हें ठीक कर सकता है? और वह

अभिभूत है। वह कहता है कि वह इस पूरी त्रासदी से कितना अभिभूत है। वह 1:12 में खुद सिय्योन की तरह बात करता है जहाँ उसने अपने दुःख की विशिष्टता के बारे में बात की थी।

क्या मेरे दुख जैसा कोई दुख है जो मुझ पर लाया गया है? और वह इस अनोखेपन को पहचानता है कि वह इसका वर्णन नहीं कर सकता। वह अपने ज्ञान में किसी भी चीज़ के साथ इसकी पर्याप्त तुलना नहीं कर सकता। यह इतना बुरा और इतना चरम है।

और वह कहता है, समुद्र जितना विशाल तुम्हारा विनाश है, कौन तुम्हें ठीक कर सकता है? और वह आपदा की भारी प्रकृति के बारे में बात करता है। यह महासागर की तरह है। यह भूमध्य सागर की तरह है।

यह इतना बड़ा है कि वह इसे समझ नहीं सकता। लेकिन हिब्रू सोच में एक अतिरिक्त कारक है क्योंकि समुद्र का अक्सर रूपक के रूप में उपयोग किया जाता है। और यह अराजकता की बात करता है।

यह अराजकता का प्रतीक है। और यह रहस्योद्घाटन में उठाया गया है, रहस्योद्घाटन अध्याय एक की शुरुआत में। समुद्र अब नहीं रहा और यह मानवीय मामलों में अराजकता का अंत है।

और इसलिए, समुद्र में जितना हम सोचते हैं, उससे कहीं ज़्यादा है। यह एक अव्यवस्थित, पूरी तरह से अव्यवस्थित स्थिति है जो ठीक होने, मदद करने और इससे बाहर निकलने से परे है।

और फिर अपराध की बात आती है। लेकिन अब यह एक विशेष अपराध है। आपके भविष्यवक्ताओं ने आपके लिए झूठे और भ्रामक दर्शन देखे हैं।

उन्होंने आपके भाग्य को बहाल करने के लिए आपके अधर्म को उजागर नहीं किया है, बल्कि आपके लिए झूठे और भ्रामक भविष्यवाणियाँ देखी हैं। निर्वासन से पहले के कई भविष्यवक्ताओं ने दूसरे प्रकार के भविष्यवक्ताओं का उल्लेख किया है जिन्हें यरूशलेम पसंद करता था। अरे हाँ, आपके भविष्यवक्ता, वे भविष्यवक्ता जिन्हें आप सुनना पसंद करते हैं।

आप हमें विनाश के बारे में बोलते हुए सुनना पसंद नहीं करते, लेकिन दूसरे प्रकार के भविष्यवक्ताओं ने शांति और आश्वासन की बात की। चिंता न करें। और हम कभी-कभी उन्हें शालोम भविष्यवक्ता कहते हैं।

सब कुछ ठीक हो जाएगा। भगवान हमारे साथ हैं। क्या आपको इस पर विश्वास नहीं है? बस भगवान पर भरोसा रखें।

सब कुछ ठीक हो जाएगा। और पश्चाताप की बात कभी नहीं की गई। उन भविष्यवक्ताओं को पश्चाताप की बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पाप करना उनके भविष्यसूचक क्षितिज में नहीं आया। और इसलिए, वे गलत संदेश लेकर आए। और वे ही वे लोग थे जिनकी सिय्योन ने सुनी।

वे ही थे। और यिर्मयाह के पास इन भविष्यवक्ताओं के खिलाफ़ दैवीय कथनों का एक लंबा खंड है। और इसलिए, वे ही हैं जो अपराध के मूल में हैं, कारण को बढ़ाते हैं और अपराध को इस हद तक बढ़ाते हैं कि उन्हें इस तथाकथित भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन से मदद नहीं मिली, जो वास्तव में ईश्वर का नहीं था।

यह आपके अधर्म को उजागर नहीं करता है जैसा कि सच्चे भविष्यद्वक्ताओं ने किया था। और इसलिए, यह बर्बादी का एक कारण था। यह प्रक्षेपवक्र के लिए अपराध की बात करता है, जो प्रक्षेपवक्र के लिए दुःख के बाद आता है।

लेकिन फिर एक दूसरा कारण था, अपमान की एक दूसरी पीड़ा। और यह श्लोक 15 में आता है। जो लोग रास्ते से गुजरते हैं वे आपके लिए ताली बजाते हैं।

वे यरूशलेम के द्वार पर फुफकारते हैं और सिर हिलाते हैं। और अब हम वापस उस बात पर आते हैं जो सिय्योन ने कही थी, इस तरह से 112 में एक बर्बाद शहर से गुज़रने की बात कही गई थी। और गुरु इसे उठाता है।

और यहाँ वह उनके उपहास और उनके सिर हिलाने और ताली बजाने की बात करता है। अलग-अलग संस्कृतियों में इशारों का अलग-अलग मतलब होता है। और जाहिर है कि इस संदर्भ में, यह मजाक और उपहास, यरूशलेम पर हँसने को संदर्भित करता है।

और इसलिए यहाँ वह दूसरा कारक है। आपदा लोगों के लिए हंसी का विषय बन गई है। और यह सिय्योन के घावों पर नमक छिड़कता है और इसे सहना कठिन बनाता है।

और फिर अंत में पद 15 में, क्या यह वह शहर है जिसे सुंदरता की पूर्णता, सारी पृथ्वी का आनंद कहा जाता था? यह एक ऐसी उम्मीद है जो पूरी नहीं हुई थी। यह सिय्योन धर्मशास्त्र है। और इसका एक हिस्सा भजन 48 में सिय्योन, सारी पृथ्वी के आनंद के एक गीत से उद्धरण है।

और दूसरी आयत में, यह सिय्योन पर्वत को पूरी धरती का आनंद बताता है। और यह संभवतः एक ऐसा पाठ रहा होगा जिसका उल्लेख शालोम के भविष्यवक्ताओं ने किया था। और सुंदरता की यह पूर्णता, यह एक निकटवर्ती भजन में आती है, सिय्योन का गीत नहीं, बल्कि यह सिय्योन के गीत का मूल भाव है।

भजन 50 की दूसरी आयत में सिय्योन को सुंदरता की पूर्णता, सुंदरता की पूर्णता कहा गया है। हाँ, यह परमेश्वर का शहर है। यह एक ऐसा शहर है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है।

लेकिन यह पूरा सिय्योन धर्मशास्त्र, वह अपेक्षा, जिसके बारे में मुझे पूरा यकीन है कि झूठे भविष्यवक्ताओं ने उसे अपनाया था, वह गलत साबित हुई। और यह एक ऐसी अपेक्षा है जो पूरी नहीं हुई। और अक्सर दुःख में ऐसी अपेक्षाएँ खत्म हो जाती हैं जिन पर व्यक्ति निर्भर था और जिसके बिना उसे जीना सीखना पड़ता है।

और उपहास का यह स्वर पद्य 16 में भी जारी है। क्षमा करें, मुझे अपना सामान लेना है, नहीं, मैं ठीक हूँ। मेरे पास घड़ी है।

पद 16 में इस उपहास और अपमान की निरंतरता है। तुम्हारे सभी शत्रु तुम्हारे विरुद्ध अपना मुँह खोलते हैं। वे फुफकारते हैं, वे अपने दाँत पीसते हैं, वे चिल्लाते हैं, हमने उसे खा लिया है।

आह, यह वह दिन है जिसका हम इंतजार कर रहे थे। आखिरकार, हमने इसे देख लिया है। और ये अब विनाशकारी दुश्मन हैं।

और ये विजेता हैं। वे इस अपमान और उपहास, इस दूसरे प्रकार की पीड़ा में विजेता के रूप में शामिल होते हैं। और उन्हें लगता है कि वे बस यही कर रहे हैं।

और उनका दिन का संदर्भ, यह वह दिन है जिसका हम इंतज़ार कर रहे हैं। आह, ठीक है, गुरु और सिंघोन प्रभु के दिन के बारे में बात कर रहे हैं। हमने सोचा कि यह भगवान था।

ओह, यह हम हैं, विजेता कहते हैं। यह हमारा दिन है, हमारा महान दिन जिसके लिए हम योजना बनाते हैं। और हम जिम्मेदार हैं।

और इसलिए, हम खुद को बधाई देते हैं। मिशन पूरा हुआ। यह वह दिन है जिसका हम इंतजार कर रहे हैं।

आखिरकार, हमने इसे देख लिया है। यह बहुत समय से आ रहा था, लेकिन हमने इसे कर दिखाया, सैनिकों, हमने इसे कर दिखाया। और इसलिए, यह उनकी प्रतिक्रिया है।

लेकिन फिर श्लोक 17 में इस बात को सही बताया गया है। प्रभु ने वही किया जो उसने तय किया था। उसने अपनी धमकी को पूरा किया जैसा उसने बहुत पहले तय किया था।

और यह जो कह रहा है वह सत्य है जैसा कि गुरु ने देखा था। कि वास्तविक दिन प्रभु का दिन था। और यह उद्देश्य, यह धमकी, भविष्यद्वक्ताओं और उस दिन को संदर्भित करती है जिसका उल्लेख प्रभु ने वहाँ किया था।

और यह वैसा ही है जैसा उसने बहुत पहले तय किया था, 8वीं सदी के मध्य से ही, उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य दोनों के आने वाले विनाश के भविष्यसूचक गवाह थे। और अब यह हो चुका है। और इसलिए, यहाँ अतीत के भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन का संदर्भ है।

उसने बिना दया के, बिना दया के, उसे नष्ट कर दिया है। एक बार फिर, यहाँ व्यक्त किए जा रहे भविष्यवक्ताओं से लिया गया यह मुख्य वाक्यांश। उसने शत्रु को आपके ऊपर आनन्दित कर दिया है।

परमेश्वर का हाथ है। शत्रु तुम्हारे कारण आनन्दित हो रहा है, लेकिन उसके पीछे यही वास्तविक विपत्ति का कारण बनकर खड़ा है। और उसने तुम्हारे शत्रुओं की शक्ति को बढ़ाया है।

उसने आपके शत्रुओं का सींग ऊंचा किया है। और वह वही है जिसने उन्हें इस तरह से विजय प्राप्त करने की अनुमति दी है। इसलिए, अंततः ईश्वर ही जिम्मेदार है, न कि मानव शत्रु।

और यही श्लोक 1 से 8 का अर्थ था जब परमेश्वर विनाश की उन सभी क्रियाओं का विषय था। और श्लोक 17 बताता है कि श्लोक 8 में परमेश्वर का निर्धारण वापस आ गया है। और इसलिए, श्लोक 17, जिसमें इस अध्याय के पहले भाग की बहुत सारी प्रतिध्वनियाँ हैं, यह कविता के पहले भाग का स्पष्टीकरण है। श्लोक 18 से 22 सभी प्रार्थना से संबंधित हैं।

और श्लोक 8 और 19 में, यह अभी भी मार्गदर्शक ही बोल रहा है और अभी भी सिंघों से बात कर रहा है। लेकिन अब वह सिंघों को विलाप की प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करता है। और फिर 20 से 22 में, हम सिंघों की अपनी प्रार्थना पर आएँगे।

लेकिन सबसे पहले, श्लोक 18 से, हे सिंघों की बेटी की दीवार, प्रभु को ऊँची आवाज़ में पुकारो। यहाँ सिंघों की दीवार का मानवीकरण है। और उस टूटी हुई दीवार को विलाप करने के लिए कहा गया है।

और यह श्लोक 8 को उठा रहा है, जहाँ प्राचीर और दीवार का मानवीकरण है। वह प्राचीर और दीवार को विलाप करने के लिए कहता है। वे एक साथ दुखी होते हैं।

लेकिन उन्हें सिर्फ अपने दुख पर विलाप करने के लिए ही विलाप नहीं करना है। उन्हें अब प्रार्थना विलाप में भी शामिल होना है। और इसलिए, यह श्लोक 8 को उठाता है और कहता है, हमें अंतिम संस्कार विलाप से आगे जाना है। और हमें दीवार की ओर बढ़ना है, और आपको प्रार्थना विलाप की ओर बढ़ना है।

लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, यह स्पष्ट रूप से बेटी सिंघों को संदर्भित करता है। दिन-रात आँसू बहने दो। अपने आप को कोई राहत न दें, अपनी आँखों को नहीं, अपने आप को कोई आराम न दें, अपनी आँखों को कोई राहत न दें।

और इसलिए, प्रार्थना समस्या की जड़ तक जाएगी। और यह श्लोक 19 है, प्रभु को ज़ोर से पुकारना बहुत ज़रूरी है। प्रार्थना समस्या की जड़ तक जाएगी।

यह उस व्यक्ति से संबंधित होगा जिसने दुख दिया है। और इसलिए वह ही है जो समस्या से निपटने में सक्षम है, स्वयं ईश्वर। ईश्वर ही वह है जिसके पास दुख पहुँचाया जा सकता है।

और उस दुःख को केवल बोले गए शब्दों में ही नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से इस अनियंत्रित रोने में भी व्यक्त किया जाना चाहिए, जो दुःख की अभिव्यक्ति के रूप में लगातार जारी रहे। लेकिन फिर हम 19 में प्रार्थना पहलू पर आते हैं। उठो, रात के पहरों की शुरुआत में चिल्लाओ।

रात के घंटों को कई पहरों में बांटा गया था। यह रात का पहला पहर है जब दूसरे लोग बिस्तर पर जाने और सोने के बारे में सोच रहे होते हैं। खैर, चलते रहो, चिल्लाते रहो।

प्रार्थना करते समय प्रभु की उपस्थिति के सामने अपने हृदय को जल की तरह उंडेल दें। अपने बच्चों के जीवन के लिए अपने हाथ प्रभु की ओर उठाएं। फिर, हर गली के मुहाने पर भूख से बेहोश हुए लोगों को देखें, घेराबंदी के दौरान भूख की उस स्थिति को देखें और गुरु की अपनी पीड़ा को याद करें और कहें, यह केवल दुख की बात नहीं है, बल्कि उस दुख को ईश्वर के पास ले जाएं।

और हाथ ऊपर उठाना, यह हाथ था, यह प्रार्थना के शब्दों को पुष्ट करने वाला एक इशारा था। अध्याय 1 और श्लोक 12 में, राहगीरों से यह अपील थी, अध्याय 1 के श्लोक 17 में, गुरु ने सिय्योन के हाथ फैलाने का वर्णन किया, लेकिन उस क्षैतिज अपील को अब एक ऊर्ध्वाधर अपील और हाथों को भगवान की ओर उठाने के साथ पूरक होना था। और वह उन बच्चों के बारे में सोचता है जो घेराबंदी के दौरान भूख से मर गए थे, जो अपने आस-पास के वयस्कों की तुलना में अभावों को झेलने में कम सक्षम थे।

और फिर 20 से 22 में, सिय्योन प्रार्थना करती है और वह मण्डली के लिए आदर्श के रूप में कार्य करती है। मण्डली को इसी तरह से आगे बढ़ना चाहिए। उन्हें भी शोक मनाने की स्थिति में आना चाहिए, हाँ, लेकिन साथ ही उन्हें अपना दुख परमेश्वर के सामने भी लाना चाहिए।

और 20 से 22 में, हमारे पास दर्दनाक पीड़ा के पाँच उदाहरण हैं। और हम यह अवलोकन दे सकते हैं, सबसे पहले, कि श्लोक 20 में, क्या महिलाओं को अपने बच्चों को खाना चाहिए, जो उनके द्वारा पैदा किए गए बच्चे हैं? इसे अध्याय 4 और श्लोक 10 में उठाया जाएगा और अधिक विकसित किया जाएगा। लेकिन जो हुआ वह यह था कि बच्चे मर गए थे, जैसा कि हम पहले ही इस अध्याय में देख चुके हैं, और परिवार के बाकी सदस्यों के पास भोजन नहीं था, वे जीवित रहने के लिए उन मृत शरीरों का भोजन के रूप में उपयोग करते थे, जिसके बारे में सोचना भयानक है, लेकिन यह एकमात्र तरीका था जिससे अन्य लोग जीवित रह सकते थे।

लेकिन यह दर्दनाक पीड़ा का एक उदाहरण है। और फिर श्लोक 20 के अंत में, क्या पुजारी और भविष्यद्वक्ता को प्रभु के पवित्र स्थान में मार दिया जाना चाहिए, जैसा कि बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने में हुआ था? इस दोहरे अपवित्रीकरण में, धार्मिक नेताओं को पवित्र स्थान में मार दिया गया। और फिर श्लोक 21 की शुरुआत में, बूढ़े और जवान, युवा और बूढ़े सभी सड़कों पर जमीन पर पड़े हुए थे।

और फिर चौथा उदाहरण है युवा पुरुषों और युवतियों की हत्या, ताकि वे अपना बाकी प्राकृतिक जीवन न जी सकें। मेरी युवतियाँ, मेरे युवा पुरुष तलवार से मारे गए हैं। और फिर अंत में, श्लोक 22 के अंत में, बच्चों के बारे में सोचते हुए, जब बेबीलोन की सेना यरूशलेम में घुसी तो कोई भी बच नहीं पाया या जीवित नहीं बचा।

जिन्हें मैंने जन्म दिया और पाला, वे मेरे दुश्मन नष्ट हो गए। और जो बच्चे अकाल से नहीं मरे, वे मारे गए; उनमें से कई को शहर के गिरने के बाद दुश्मन सैनिकों ने मार डाला। और इसलिए, यह आखिरी दुखद उदाहरण है।

और इसलिए, यरूशलेम के विनाश की समस्या के इस पूरे अलग पहलू को सामने लाते हुए, इस सब की दर्दनाक सामग्री को उजागर किया गया है। और इसलिए, यह श्लोक 20 में शुरू होता है। हे प्रभु, देखो और विचार करो, तुमने यह किसके साथ किया है? और सोच यह है कि, यह यरूशलेम, परमेश्वर के शहर, परमेश्वर के साथ एक विशेष संबंध में कैसे हो सकता है? यह उलटफेर बर्दाश्त से बाहर है, और यरूशलेम, सभी शहरों में से, इस तरह से पीड़ित होना चाहिए था।

हम इस प्रार्थना में पाते हैं कि सोचने के दो अलग-अलग तरीके हैं। यहाँ सिख्योन एक तनाव व्यक्त कर रहा है, और यह एक ऐसा तनाव है जिसे मण्डली को भी महसूस करना चाहिए और अपने तरीके से काम करना चाहिए। यह उसकी त्रासदी की दो विपरीत धारणाओं के बीच टकराव है।

एक है उसके मन की धारणा, और दूसरी है उसकी अंतःप्रज्ञा की धारणा। और सबसे पहले, उसके पास एक तरह की संज्ञानात्मक धारणा है। हाँ, वह तर्कसंगत रूप से सोचने में सक्षम है।

हाँ, वह स्वीकार करती है कि विनाश के लिए यहोवा जिम्मेदार है। यह कई मायनों में निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणी के अनुरूप है। और यह उस ईश्वरीय नकारात्मक हस्तक्षेप से सहमत है जिसके बारे में हम भविष्यवाणियों में पढ़ते हैं।

और इसलिए, 21 में, उस अंतिम भाग में, आपने उन्हें मार डाला, कल्लेआम किया। आपने उन्हें मार डाला, वह दैवीय नकारात्मक हस्तक्षेप, जैसा कि आपदा के भविष्यवाणियों में होता है। और फिर दो, यह फिर से निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणी के साथ जुड़ता है, जो प्रभु के दिन से जुड़ता है।

क्योंकि फिर से, श्लोक 21 में, आपके क्रोध के दिन, आपने उन्हें मार डाला। और फिर 22 में, प्रभु के क्रोध के दिन। तो हाँ, फिर से, यह निर्वासन-पूर्व भविष्यवाणी के साथ संबंध है।

और फिर, श्लोक 21 पर वापस जाते हुए, दया के बिना, यह एक पूर्व-निर्वासन नोट है जो प्रतिध्वनित हो रहा है। और फिर 20 बी में भी, कुछ ऐसा है जिस पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। और वह व्यवस्थाविवरण का संदर्भ है।

व्यवस्थाविवरण को देखें तो, वास्तव में, महिलाओं द्वारा अपने बच्चों को खाने का यह संदर्भ, वस्तुतः उनके गर्भ का फल है। और यह भी व्यवस्थाविवरण 28 से लिया गया है। और इसलिए, जो हुआ था उसकी पुष्टि टोरा में की गई है।

और इसलिए, मानसिक रूप से, कोई व्यक्ति जो हुआ है उसे समझ सकता है और उसे स्वीकार कर सकता है। लेकिन, एक भावनात्मक धारणा भी होती है। और यह भी एक संघर्ष पैदा करता है, मन और दिल के बीच संघर्ष।

सिख्योन को एक ऐसे संकट की भयावहता पर अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करनी चाहिए जो उम्मीदों को धता बताता है। और वे पुरानी उम्मीदें, वे पूरी नहीं हुई थीं, लेकिन वे भयानक नई घटनाओं से बुरी तरह प्रभावित हुई थीं। और सिख्योन यहाँ वही दोहरा रही है जो उसने गुरु से सीखा है।

और वह इस कविता में पहले की अपनी दो प्रतिक्रियाओं का सारांश प्रार्थना कर रही है। 1-8 और 17 में एक तर्कसंगत धारणा, एक संज्ञानात्मक धारणा थी, एक दिव्य नकारात्मक हस्तक्षेप। प्रभु ने इसके अनुरूप किया है, और मैं भविष्यवाणियों में ऐसा करूँगा।

और फिर पद एक में उसके क्रोध का दिन, हाँ, प्रभु का दिन, प्रभु के क्रोध का दिन सपन्याह और आमोस है, जैसा कि सपन्याह ने कहा था। और फिर, बिना दया या बिना दया के, जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने कहा था, हाँ। सिख्योन ने व्यवस्थाविवरण 28 में पद 20 में एक और टोरा संदर्भ जोड़कर आगे बढ़कर, अध्याय एक में संरक्षक और सिख्योन द्वारा खुद जोड़े गए संदर्भों को आगे बढ़ाया था।

लेकिन फिर गुरु को भी एक भावनात्मक अनुभूति हुई जिसका वह सामना नहीं कर सकता था। और यह श्लोक 11 में था। और श्लोक 13 में आगे कहा गया है, समुद्र जितना विशाल तुम्हारा विनाश है।

और इसलिए, गुरु स्वयं इस तनाव, इस चुनौती, एक तरफ जो कुछ हुआ था उसे तर्कसंगत बनाने और दूसरी तरफ भावनात्मक रूप से उससे निपटने की कोशिश करने के बीच के संघर्ष से अवगत थे। और सिख्योन क्या कर सकता है? सिख्योन को जो करने के लिए कहा गया है वह यह है कि वह इस संघर्ष को प्रार्थना में परमेश्वर के सामने रखे और देखें कि क्या होगा। अगली बार, हम अध्याय तीन के पहले भाग का अध्ययन करने जा रहे हैं।

और मैं चाहता हूँ कि आप विलापगीत के अध्याय तीन की आयत संख्या एक से 16 को ध्यान से पढ़ें।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा विलापगीत की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 5, विलापगीत 2:1-22 है।